ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 7 | ISSUE - 2 | OCT - 2020

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

''समाज में मीडिया की भूमिका''

डॉ. गफार सिकंदर मोमीन

प्रस्तावना:

समाज में मीडिया की भूमिका पर बात करने से पहले हमें यह जान लेना चाहिए कि आखिर मीडिया क्या है? मीडिया हमारे चारो ओर मौजूद है, टी.वी सीरियल व शो जो रोज हम देखते हैं, संगीत जो हम रेडियो पर सुनते हैं, पत्र एवं पत्रिकाएँ जो रोज हम पढ़ते हैं, क्योंकि मीडिया हमारे काफी करीब रहता है, हमारे चारो ओर यह मौजूद रहता है, तो जाहिर सी बात है कि इस का प्रभाव हमारे ऊपर और हमारे समाज के ऊपर पड़ेगा ही। लोकतंत्र के चार स्तम्भ जाने जाते हैं, विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और पत्रकारिता। यह स्वाभाविक है कि जिस सिंहासन के चार पायों में से एक भी पाया खराब हो जाये तो वह रत्नजड़ित सिंहासन भी अपनी आन–बान और शान गँवा देता है। किसी ने शायद ठीक ही कहा है कि 'जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।' याद कीजिए वो दिन जब देश गुलामी की जंजीरों से जकड़ा हुआ था, तब अंग्रेजी हुकूमत के पाँव उखाड़ने देश के अलग–अलग क्षेत्रों से जनता को जागरूक करने के लिए एवं ब्रिटिश हुकूमत की असलियत जनता तक पहुँचाने के लिए कई पत्र–पत्रिकाओं व अखबारों ने लोगों को आजादी के समर में कूद पड़ने एवं भारत माता को आजाद कराने के लिए कई तरह से जोश भरे व समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का बखूबी से निर्वहन भी किया। तब देश के अलग–अलग क्षेत्रों से, स्वराज, केसरी, काल, पयामें आजादी, युगांतर, वंदे मातरम, संध्या, प्रताप, भारत माता, कर्मयोगी, भविष्य, अभ्युदय, चाँद जैसे कई ऐसे पत्र–पत्रिकाओं ने सामाजिक सरोकारों के बीच देश भक्ति का पाठ लोगों को पढ़ाया, और आजादी की लड़ाई में योगदान देने हेतु हमें जागरूक भी किया।

एक समय था जब अखबार को समाज का दर्पण कहा जाता था, समाज में जागरूकता लाने में अखबारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह भूमिका किसी एक देश या क्षेत्र तक सीमित नहीं है, विश्व के तमाम प्रगतिशील विचारों वाले देशों में समाचार पत्रों की महती भूमिका से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता। मीडिया में और विशेष तौर पर प्रिण्ट मीडिया में जनमत बनाने की अद्‌भुत शक्ति होती है। नीति–निर्धारण में जनता की राय जानने में और नीति–निर्धारकों तक जनता की बात पहुँचाने में समाचार पत्र और मीडिया सेतु का काम करते हैं। समाज पर समाचार पत्रों का प्रभाव जानने के लिए हमें एक दृष्टि अपने इतिहास पर डालनी चाहिए। लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी और नेहरू जैसे स्वतंत्रता सेनानियों ने अखबारों को अपनी लड़ाई का एक महत्वपूर्ण हथियार बनाया। आजादी के संघर्ष में भारतीय समाज को एकजुट करने में समाचार पत्रों की विशेष भूमिका थी। यह भूमिका इतनी प्रभावशाली थी कि अंग्रेजों ने प्रेस के दमन के लिए हर संभव कदम उठाए। स्वतंत्रता के पश्चात लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा और वकालत करने में अखबार अग्रणी रहे। आज मीडिया सिर्फ अखबारों तक ही सीमित नहीं है, परन्तु इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और वेब मीडिया की तुलना में प्रिंट मीडिया की पहुँच और विश्वसनीयता कहीं

अधिक है। प्रिंट मीडिया का महत्व इस बात से और बढ़ जाता है कि आप छपी हुई बातों को संदर्भ के रूप में भी इस्तेमाल कर सकते हैं। ऐसे में प्रिण्ट मीडिया की जिम्मेदारी भी निश्चित रूप से बढ़ जाती है।

अपने आरम्भिक दिनों में पत्रकारिता हमारे देश में एक मिशन के रूप में जन्मी थी, जिसका उद्देश सामाजिक चेतना को और अधिक जागरूक करने का था। देश की स्वतंत्रता के बाद सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक ढाँचे में जहाँ बुनियादी परिवर्तन आए, वहीं पत्रकारिता के क्षेत्र मैं भी व्यापक बदलाव आया। इसने एक प्रच्छन्न उद्योग का स्वरूप ग्रहण कर लिया। जिसके कारण उद्योगों की समस्त अच्छाइयों के साथ इस की विकृतियाँ भी पत्रकारिता में आने लगीं। इस तरह निष्पक्ष पत्रकारिता का पूरा आदर्श और ढाँचा ही चरमराने लगा। जब भी मीडिया और समाज की बात की जाती है तो मीडिया को समाज में जागरूकता पैदा करने वाले एक साधन के रूप में देखा जाता है, जो कि लोगों को सही व गलत करने की दिशा में एक प्रेरक का कार्य करता नजर आता है, जहाँ कहीं भी अन्याय है, शोषण है, अत्याचार, भ्रष्टाचार और छलना है, उसे जनहित में उजागर करना पत्रकारिता का मर्म और धर्म है। हर तरफ से निराश व्यक्ति अखबार की तरफ जाता है। अखबार ही उनकी अंधकारमय जिन्दगी में उम्मीद की आखिरी किरण है। मीडिया समाज की आवाज शासन तक पहुँचाने में उसका प्रतिनिधि बनता है। मीडिया के लिए शोषितों की आवाज उठाना ज्यादा महत्वपूर्ण है। अथवा क्रिकेट की रिपोर्टिंग करना, आम आदमी के मुद्दे बड़े हैं अथवा किसी सिलेब्रेटी की निजी जिन्दगी? आज की पत्रकारिता इस दौर से गुजर रही है जब उसकी प्रतिबद्धता पर प्रश्नचिह्न लग रहे हैं। समय के साथ मीडिया के स्वरूप और मिशन में भी काफी परिवर्तन हुआ है। अब गंभीर मुद्दों के लिए मीडिया में जगह घटी है। अखबारों का मुखपृष्ठ अमूमन राजनेताओं की बयान बाजी, घोटालों, क्रिकेट मैच अथवा बाजार के उतार चढ़ाव को ही मुख्य रूप से स्थान देता है।

आधुनिकता व वैश्वीकरण के इस दौर में इन पत्र–पत्रिकाओं व नामी–गिरामीन्यूज चैनलों को ग्रामीण परिवेश को कोई लाभ नहीं हो पाता, और उसका कोई सरोकार भी नहीं है। इसलिए वे धीरे–धीरे इससे दूर भाग रहे हैं, और औद्योगीकरण के इस दौर में पत्रकारिता ने भी सामाजिक सरोकार को भुलाते हुए मात्र उद्योग का रूप ले लिया है। इस तरह की प्रवृत्तियों पर मीडिया को लगाम लगाने की सोचनी चाहिए। अपनी टी.आर.पी. के लिए किसी की आबरू से खेलना अच्छी बात नहीं। मीडिया और सरकार के बीच हमेशा रिश्ते अच्छे नहीं हो सकते, क्योंकि मीडिया का काम ही है सरकारी कामकाज पर नजर रखना। लेकिन वह सरकार को लोगों की समस्याओं, उनकी भावनाओं और उनकी माँगों से भी अवगत कराने का काम करता है। और यह अवसर भी उपलब्ध कराता है कि सरकार जन भावनाओं के अनुरूप काम करे। आज देश आतंकवाद, नस्लवाद जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है, लेकिन इससे निपटने के लिए आम जनता को क्या करना चाहिए, सरकार की इसमें क्या भूमिका हों सकती है, इत्यादि कई मुद्दों पर मीडिया आज मौन रूख अख्तियार किए हुए है। लेकिन वहीं दूसरी ओर आतंकी गतिविधियों से लेकर नक्सली क्रूरता को लाइव दिखाने में भी मीडिया पीछे नहीं है, यहाँ तक की आज सर्वप्रथम किसी खबर को दिखाने की होड़ में मीडिया के समक्ष आतंकी व नक्सली हमलों के तुरन्त बाद ही हमला करने वाले कमांडर व अन्य आरोपियों के फोन व ई.मेल तक आ जाते हैं। गौर करने वाली बात यह है कि बार–बार व प्रतिदिन इस समाचार को दिखाने व छापने से फायदा किसका होता है, आम जनता का, पुलिस का, नक्सली व आतंकी का या फिर मीडिया घरानों का। निश्चित रूप से इसका फायदा मीडिया व इन देश द्रोही तत्वों को होता है, जिन्हें बिना किसी कारण से बढ़ावा मिलता है। क्योंकि बार–बार इनको प्रदर्शित करने से आमजनों व बच्चों से संबंधित लोगों के खिलाफ खौफ उत्पन्न हो जाता है और ये असामाजिक तत्व चाहते भी यही है।

इसलिए आज जरूरी हैं कि मीडिया और इसको चलाने वाले ठेकेदारों को यह तय करना होगा कि मीडिया ने सामाजिक सरोकारों को एकदम से अलग कर दिया है, लेकिन लगातार मीडिया की भूमिका कई मामलों में संदिग्ध सी लगती है। कई विषयों जहाँ पर उन्हें न्याय दिलाने की जरूरत होती है एवं लोगों को मीडिया से यह अपेक्षा होती है कि मीडिया के द्वारा उनकी माँगों व समस्याओं पर विशेष ध्यान देते हुए समस्या का समाधान किया जाएगा। ऐसे कई मौको पर मीडिया की भूमिका से लोगों को काफी असहज सा महसूस होता है। कभी–कभी तो ऐसा भी महसूस किया जाता है कि कुछ मीडिया

घराना मात्र किसी एक व्यक्ति पार्टी व संस्था के लिए ही कार्य कर रही है। अत: मीडिया को एक बार फिर से ठीक उसी तरह निष्पक्ष होना पड़ेगा, जिस तरह से आजादी के पहले व अभी के कुछ आन्दोलनों में जनता के साथ देखा गया।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में ब्रेकिंग न्यूज की होड़ में यह अनुमान लगाना, कठिन हो जाता है कि सच्चाई क्या हैं। आज प्रिण्ट मीडिया को इलेक्ट्रानिक मीडिया से तगड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया अपने स्वरूप और सामर्थ्य की वजह से दर्शकों को २४ घण्टे उपलब्ध रहती है। टी.आर.पी. की चाह में टी वी न्यूज चैनल सिर्फ गंभीर विमर्शों तक सीमित नहीं है, अपितु वे फिल्मी चकाचौंध, सास बहू के किस्सों, क्रिकेट की दुनिया के अलावा अंधविश्वासों तक को अपने प्रोग्राम में काफी स्थान देते हैं। ऐसे में प्रिण्ट मीडिया का भी स्वरूप बदलने लगा है और अखबारों के पन्ने भी झकझोरने की बजाय गुदगुदाने का काम करने लगे हैं। मीडिया मालिकों की पूँजीवादी सोच के अलावा पत्रकारों की तैयारी भी एक बड़ा मसला है। एक समय था जब पत्रकार होना सम्मान जनक माना जाता था। बड़े—बड़े साहित्यकारों ने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अपनी लेखनी का झण्डा बुलन्द किया था।

प्रेमचंद, माखनलाल चतुर्वेदी, महादेवी वर्मा से लेकर अज्ञेय, धर्मवीर भारती, कमलेश्वर आदि दिग्गज साहित्यकारों ने एक पत्रकार के रूप में भी सामाजिक बोध जगाने के अपने दायित्व का निर्वहन किया और राजनैतिक पत्रकारिता से ज्यादा रूचि मानवीय पत्रकारिता में दिखाई। खबरों में नमक मिर्च लगाकर पेश करने और उसे चटखारेदार बनाने के प्रयासों में पत्रकारिता भटक जाती है। पत्रकारिता की भूमिका मानवाधिकारों तथा लोकतंत्र की रक्षा के लिए बहुत महत्व की है। संविधान में उल्लिखित मौलिक अधिकार मोटे तौर पर मानवाधिकार ही हैं। हर व्यक्ति को स्वतंत्रता व सम्मान के साथ जीने का अधिकार है, हर व्यक्ति को स्वतंत्रता व सम्मान के साथ जीने का अधिकार है, चाहे वह किसी भी धर्म, जाति या वर्ग का क्यों न हो। लोकतंत्र में मानवाधिकार का दायरा अत्यंत विशाल है। राजनैतिक स्वतंत्रता, शिक्षा का अधिकार, महिलाओं के अधिकार, बाल अधिकार, नि:शक्तों के अधिकार, आदिम जातियों के अधिकार, दलितों के अधिकार जैसी अनेक श्रेणियाँ मानवाधिकार में समाहित है। सूचना के प्रचार—प्रसार से लेकर आम राय बनाने तक में मीडिया अपने कर्तव्यों का भली—भाँति वहन करता है। मीडिया ने हमारे समाज के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। यदि मीडिया समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए सत्य की राह पर चले तो उसे समाज और राष्ट्र का कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता है। लेकिन यदि दुर्भाग्य वश मीडिया ने समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को नजर अंदाज करते हुए असत्य की राह पकड़ली तो समाज व राष्ट्र का सर्वनाश निश्चित है। मीडिया के दुरूपयोग को आमिरखान ने अपनी फिल्म 'पीपली लाइव' में काफी करीब से दिखाने का प्रयत्न किया है।

संदर्भ ग्रंथ

१. विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता, डॉ. पवन कुमार जैन, संस्करण, १९९३
२. हिंदी पत्रकारिता की भाषा, राजकिशोर
३. हिंदी पत्रकारिता का बदलता स्वरूप, श्रवण कुमार
४. मीडिया, साहित्य और संस्कृति, माधव हाडा
५. मीडिया लेखन कला, प्रो. सुर्यप्रसाद दीक्षित, डॉ. नवन अग्रवाल
६. मीडिया लेखन विचार, ओम गुप्ता
७. हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, डॉ. ठाकुरदत्त शर्मा आलोक
८. मीडिया और हिंदी साहित्य, संपादक — राजकिशोर
९. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया लेखन, प्रो. रमेश जैन
१०. जनपत्रकारिता, जनसंचार एवं जनसम्पर्क, प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित